P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-III, February-2015
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

बालाघाट जिले में आयु विशिष्ट एवं प्रजननता का क्षेत्रीय अध्ययन

जे.एल. बरमैया
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष,
भूगोल विभाग,
रानी दुर्गावती शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मण्डला

जितेन्द्र लाल वराड
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर

सारांश

जनसंख्या संबंधित ज्ञान की जिज्ञासा मानव को उसके अस्तित्व काल से ही रही है। वह इसके सम्बन्ध में विभिन्न उद्देश्यों को ध्यानगत रखकर किसी न किसी रूप में जानकारी रखता है। यह उद्देश्य विभिन्न प्रकार के हो सकते है, जिसमें समय, स्थान एवं उद्देश्य के अनुसार परिवर्तन पाया जाता है। मानव इतिहास इस बात का साक्षी है। मनुष्य की संख्या, प्रजननता, मर्त्यता तथा प्रवर्जन की मात्रा के साथ–साथ उनका गुण समस्त भूगोल के लिये आवश्यक पृष्ठभूमि तैयार करते हैं। मानव अपने जीवन स्तर को सुधारने के लिए सामाजिक, आर्थिक एवं जनांकिकी व्यवस्था का निर्माण करता है।

मुख्य शब्दः बालघाट जिला, प्रजननता

पस्तावना

जनांकिकी के विभिन्न पक्षों के महत्व को समझने के लिए प्रजननता के अध्ययन पर विशेष बल दिया जाता है। प्रजननता का आयु संरचना के साथ मधुर सम्बन्ध है। यह एक आधारभूत जैव शारीरिक विशेषता है। मनुष्य की आयु उसके आवश्यकताओं, कार्यक्षमता तथा विचारों को प्रभावित करती है। आयु, प्रजनन क्षमता का सूचकांक होता है। प्रजननता की वास्तविक जानकारी प्राप्त करने के लिए लिंग अनुपात का अध्ययन किया जाता है।

लिंगानुपात किसी प्रदेश की अर्थव्यवस्था का सूचक होती है अर्थात किसी अर्थव्यवस्था के विकास में स्त्री–पुरूष अनुपात का विशिष्ट स्थान होता है। लिंगानुपात का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रभाव जनांकिकीय तत्वों, प्रजननता, मर्त्यता, प्रवास तथा व्यवसायिक संरचना आदि पर भी पड़ता है। यह स्थानीक भिन्नता के विश्लेषण में एक उपयोगी उपकरण के रूप में कार्य करता है। इसी पृष्ठभ्मि में यह शोध पत्र तैयार किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

भारत के ह्रदय क्षेत्र एवं दक्कन के पठार के उत्तर में मध्यप्रदेश राज्य स्थित है। इस राज्य के दक्षिण पूर्व में बालाघाट जिला बसा है। भौगोलिक दृष्टि से यह जिला सतपुड़ा–मैकल पठारी प्रदेश का एक महत्वपूर्ण भूखण्ड है। इस पठारी प्रदेश का अधिकांश भूभाग सतपुड़ा पर्वत श्रेणी प्रदेश तथा शेष उत्तरी–पूर्वी भाग मैकल पठारी प्रदेश के अन्तर्गत आता है। इस जिले में सतपुड़ा का दक्षिण पूर्वी क्षेत्र तथा मध्य बैनगंगा घाटी सम्मिलित है। यह जिला 21^0 19′ से 22^0 24′ उत्तरी अक्षांश तथा 79^0 31′ से 81^0 3′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जिले का कुल क्षेत्रफल 9229 वर्ग किलोमीटर तथा समुद्र सतह से इसी ऊंचाई 303.33 मीटर है। प्रशासनिक दृष्टि से यह जिला 11 तहसीलों, 10 विकासखण्डों एवं 1390 ग्रामों में विभक्त है।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की जनसंख्या 17,011,56 व्यक्ति है जो मध्यप्रदेश की सम्पूर्ण जनसंख्या का 2.3 प्रतिशत हे। इस जिले का जनसंख्या वृद्धि दर 1.7 प्रतिशत, जनघनत्व 184 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर तथा साक्षरता दर 78.9 प्रतिशत है। इस जिले का लिंगानुपात 1021 है। यह मध्यप्रदेश का सर्वाधिक लिंगानुपात वाला जिला है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र में अध्ययन का उद्देश्य बालाघाट जिले में लिंगानुपात असंतुलन का क्षेत्रीय अध्ययन करने के लिए विवाहित महिलाओं की आयु विशिष्ट एवं लिंगानुपात प्रजननता की स्थिति एवं कारणों का विश्लेषण कर लिंगानुपात की वास्तविक दशा एवं दिशा को ज्ञात करना तथा लिंगानुपात में संतुलन स्थापन के लिए आवश्यक सुझाव देना है।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-III, February-2015
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

आंकड़ों के स्त्रोत एवं अध्ययन प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। लिंगानुपात का क्षेत्रीय अध्ययन के लिए प्राथमिक आंकड़ों की प्राप्ति हेतु सर्वेक्षण कार्य किये गये है। सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र के प्रत्येक नगर, ग्राम व परिवार का अवलोकन व साक्षात्कार करना संभव नहीं है। इसके लिए दैव निदर्शन प्रविधि के आधार पर अनुसूची, साक्षात्कार तथा अवलोकन द्वारा आंकड़े प्राप्त किये गये है। शोध कार्य हेतु जिले के प्रत्येक नगर का एक वार्ड तथा प्रत्येक तहसील के दो ग्रामों का चयन कर प्रत्येक अध्ययन क्षेत्र के 15 प्रतिशत परिवारों का सर्वेक्षण कर प्राथमिक आंकड़े प्राप्त किये गये है। प्रस्तुत शोध पत्र मूलतः प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है।

बालाघाट जिले में आयु विशिष्ट एवं लिंगानुसार प्रजननता

बालाघाट जिले की जनसंख्या में प्रजननता का अध्ययन करने के लिये 15–49 वर्ष की आयु वर्ग वाली विवाहित महिलाओं को अध्ययन का केन्द्र बिन्दू माना गया है। इस आयु वर्ग की महिलायें ही प्रजनन में सक्रिय रूप से भाग लेती है। विभिन्न आयु वर्गो में महिलाओं की प्रजनन क्षमता एवं प्रजननता भिन्न भिन्न पाई गई है। यह महिलाओं की जन्मदर की वास्तविक प्रवृत्तियों को प्रदर्शित करती है। प्रजननता के मापन के लिये आयु विशिष्ट प्रजनन दर का स्थान महत्वपूर्ण है। जब प्रसव के समय माता की आयु का प्रजनन दर ज्ञात किया जाता है तो इसे आयु विशिष्ट प्रजनन दर कहा जाता है। यह एक वर्ष में विशिष्ट आयु वर्ग की महिलाओं द्वारा जनित शिशुओं की कुल संख्या तथा संबंधित आयु वर्ग की कुल महिलाओं की संख्या के अनुपात का द्योतक है, जो पति 1000 महिलाओं पर जन्में शिशुओं की कुल संख्या को प्रकट करता है। इसके अंतर्गत किसी निश्चित आयु वर्ग की महिलाओं में प्रजननता सर्वाधिक तथा इसके बाद एवं पहले आयु वर्ग वाली महिलाओं में कम प्रजननता पाई गई है। अतः विभिन्न आयु वर्ग की समस्त महिलाओं को विभिन्न आयु वर्गो में विभाजित कर अलग–अलग प्रजनन दर ज्ञात की गई है।

वास्तव में जनसंख्या वृद्धि के लिये जिले की महिलायें की उत्तरदायी है। जनसंख्या वृद्धि का सही अनुपात ज्ञात करने के लिये प्रजनन आयु वर्ग की महिलाओं द्वारा उनके प्रजनन काल में उत्पन्न की गई समस्त शिशुओं की संख्या ज्ञात की गई है, जिसमें शिशु बालिका की संख्या अधिक होने पर भविष्य में जनसंख्या में वृद्धि होगी। इसका अध्ययन करने के लिये आयु विशिष्ट प्रजनन दर के साथ कुल प्रजनन दर तथा सकल पुनरूत्पादन प्रजनन दर ज्ञात कर अध्ययन का उद्देश्य प्राप्त करने की कोशिश की गई हैं।

सारणी क्रमांक – 01

अ– ग्रामीण क्षेत्र – महिलाओं की आयु विशिष्ट एवं लिंगानुपात प्रजननता

आयु वर्ग (वर्षो में)	महिलायें		जन्में शिशुओं की संख्या						लिंगानुपात	प्रजनन दर (प्रति हजार में)			
			बालक		बालिका		बालक–बालिका			आयु विशिष्ट प्रजनन दर	कुल प्रजनन दर	सकल पुनरूत्पादन दर	
	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत				बालक	बालिका
15-19	1	0.16	-	-	1	100	1	0.06	-	1000	-	-	1000
20-24	62	10.00	52	53.06	46	46.94	98	5.74	885	306.5	-	145.2	161.29
25-29	128	20.65	143	51.25	136	48.75	279	16.33	951	234.4	-	125.00	109.37
30-34	129	20.81	172	48.45	183	51.55	355	14.93	1064	131.8	-	54.26	77.52
35-39	141	22.74	201	47.07	226	52.93	407	25.00	1097	56.74	-	35.46	21.28
40-44	97	15.65	152	47.94	165	52.06	317	18.56	1086	-	-	-	-
45-49	62	10.00	97	41.99	134	58.00	231	13.52	1381	-	-	-	-
योग	620	100	817	47.83	891	52.17	1708	100	1091	120.97	8.65	1.8	6.85

उपर्युक्त सारणी क्र. 01 से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्रों में अध्ययन क्षेत्र की कुल विवाहित महिलायें 64.25 प्रतिशत है। जिन्होंने कुल 66.54 प्रतिशत शिशुओं को जन्म दिये है, जिसमें 47.83 प्रतिशत शिशु बालक एवं 52. 17 प्रतिशत शिशु बालिकायें है। जन्म के समय इनका लिंगानुपात 1091 शिशु प्रति हजार महिला है। न्यूनतम प्रजननता 15–19 वर्ष की आयु वाली महिलाओं ने कुल 0. 06 प्रतिशत शिशुओं को जन्म दिये है, जिससे बालिकायें शत प्रतिशत है। सर्वाधिक प्रजननता 35–39 वर्ष की आयु वर्ग वाली महिलाओं ने कुल 25 प्रतिशत शिशुओं को जन्म दिये है, जिसमें 47.94 प्रतिशत बालक तथा 52.06 प्रतिशत बालिकायें है तथा इनका लिंगानुपात 1097 प्रति हजार है। शोध के दौरान पाया गया है कि 15–19 वर्ष की आयु वर्ग वाली महिलाओं में आयु विशिष्ट प्रजनन दर सर्वाधिक तथा 35–39 वर्ष आयु वर्ग महिलाओं में यह प्रजनन दर सबसे कम है। अर्थात् उम्र बढ़ने के साथ–साथ प्रजनन क्षमता एवं आयु विशिष्ट प्रजनन दर कम हो रही है। ग्रामीण क्षेत्र में एक विवाहित महिला अपने प्रजनन आयु पार करते ही अपने स्थान पर 8.65 व्यक्तियों को प्रतिस्थापित कर देती है, अर्थात एक महिला के स्थान पर 8.65 व्यक्ति प्रतिस्थापित हो रहे है। इस क्षेत्र में शिशु बालक के आधार पर महिलाओं का सकल पुनरूत्पादन दर 1.80 तथा शिशु बालिका के आधार पर 6.85 प्रति हजार है। अतः भविष्य में जन्म दर बढ़ेगी, जिससे जनसंख्या में भी वृद्धि होगी।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्रों में प्रजननता एवं लिंगानुपात का स्तर ऊंचा है। इसका प्रमुख कारण शिक्षा का निम्न स्तर, अंधविश्वास तथा निर्धनता की व्यापकता है। कम उम्र में शादी करना, शादी के पश्चात शीघ्र ही संतान उत्पन्न करना, पति–पत्नी की आयु के मध्य अन्तर अधिक होना, पुत्र प्राप्ति की लालसा

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-III, February-2015
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

संतान को ईश्वरीय देन मानना तथा पुत्र को आय का स्त्रोत मानने से प्रजननता का स्तर ऊंचा है। प्रजनन दर में गिरावट लाने के लिये महिला शिक्षा पर जोर दिया जाय तथा लड़का–लड़की को बराबर महत्व दिया जाये।

सारणी क्रमांक – 02

ब– नगरीय क्षेत्र – महिलाओं की आयु विशिष्ट एवं लिगानुपात प्रजननता

आयु वर्ग (वर्षो में)	महिलायें		जन्में शिशुओं की संख्या						लिंगानुपात	प्रजनन दर (प्रति हजार में)			
			बालक		बालिका		बालक–बालिका			आयु विशिष्ट प्रजनन दर	कुल प्रजनन दर	सकल पुनरूत्पादन दर	
	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत				बालक	बालिका
15-19	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
20-24	15	4.35	13	68.42	6	31.58	19	2.21	462	666.7	-	266.7	200.00
25-29	46	13.33	38	48.72	40	51.28	78	9.08	1052	217.4	-	130.43	86.96
30-34	71	20.58	70	50.36	69	49.64	139	16.18	986	98.59	-	70.42	28.17
35-39	82	23.77	112	54.11	95	45.89	207	24.10	848	24.39	-	12.19	12.19
40-44	64	18.55	93	47.69	102	52.31	195	22.70	1096	-	-	-	-
45-49	67	19.42	111	50.23	110	49.77	221	25.73	996	-	-	-	-
योग	**345**	**100**	**437**	**50.87**	**422**	**49.13**	**859**	**100**	**966**	**75.36**	**5.04**	**2.39**	**1.64**

उपर्युक्त सारणी क्र. 02 से स्पष्ट है कि नगरीय क्षेत्र में अध्ययन क्षेत्र की कुल विवाहित महिलायें 35.75 प्रतिशत है। जिन्होंने कुल 33.46 प्रतिशत शिशुओं को जन्म दिये है, जिसमें 50.87 प्रतिशत बालक तथा 49.13 प्रतिशत बालिकायें है। जन्में शिशु का कुल लिंगानुपात 966 प्रति हजार महिला है। इस क्षेत्र में न्यूनतम प्रजननता 20–24 वर्ष आयु वर्ग की महिलाओं में है। जिन्होंने कुल 2.21 प्रतिशत शिशुओं को जन्म दिये है, जिससे 68.42 प्रतिशत बालक तथा 31.58 प्रतिशत बालिकायें हैं। जन्म के समय शिशुओं का लिंगानुपात 848 प्रति हजार महिला है। सर्वाधिक प्रजननता 45–49 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाओं ने 25.73 प्रतिशत शिशुओं को जन्म दिये है, जिसमें 50.23 प्रतिशत बालक तथा 49.77 प्रतिशत बालिकायें है। जन्म के समय शिशुओं का लिंगानुपात 996 प्रति हजार महिला है। नगरीय क्षेत्र में न्यूनतम लिंगानुपात 20–24 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाओं से जन्में शिशुओं में 462 प्रति हजार महिला है तथा उच्चतम लिंगानुपात 40–44 वर्ष की आयु वर्ग द्वारा जन्में शिशुओं में 1096 प्रति हजार महिला है।

शोध के दौरान पाया गया है कि नगरोय क्षेत्र में न्यूनतम आयु विशिष्ट प्रजनन दर 35–39 महिला प्रति हजार है तथा अधिकतम आयु विशिष्ट प्रजनन दर 20–24 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाओं में 666.67 प्रति हजार महिला है। नगरीय क्षेत्र में भी उम्र बढ़ने के साथ–साथ प्रजननता एवं आयु विशिष्ट प्रजनन दर कम हो रही ह। नगरीय क्षेत्र में एक महिला अपनी प्रजनन आयु पार करते ही अपने स्थान पर 5.035 व्यक्तियों को प्रतिस्थापित कर देती है, अर्थात एक महिला के स्थान पर 5.035 व्यक्ति प्रतिस्थापित हो रहे हैं। नगरीय क्षेत्र की विभिन्न आयु वर्ग की विवाहित महिलाओं का सकल पुनरूत्पादन दर शिशु बालक के आधार पर 2.39 प्रति हजार तथा शिशु बालिका के आधार पर यह दर 1.64 प्रति हजार है। अतः स्पष्ट है कि शिशु बालिका की कमी के कारण भविष्य में जन्म दर कम होगी तथा जनसंख्या में कमी होगी।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि नगरीय क्षेत्र में प्रजननता एवं लिंगानुपात का स्तर, ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कम है। इसका प्रमुख कारण शिक्षा का ऊंचा स्तर अंधविश्वास तथा निर्धनता की कमी है। अधिक उम्र में शादी करना, पति–पत्नी की आयु के मध्य का अन्तर कम होना, आय का उच्च स्तर तथा उच्च जीवन स्तर होने से प्रजननता में कमी आई है। शिक्षित होने के कारण पुत्र–पुत्रियों को बराबर का दर्जा देने से प्रजननता में कमी आई है।

सारणी क्रमांक – 03

स– नगरीय–ग्रामीण क्षेत्र : महिलाओं की आयु विशिष्ट एवं लिगानुपात प्रजननता

आयु वर्ग (वर्षो में)	महिलायें		जन्में शिशुओं की संख्या						लिंगानुपात	प्रजनन दर (प्रति हजार में)			
			बालक		बालिका		बालक–बालिका			आयु विशिष्ट प्रजनन दर	कुल प्रजनन दर	सकल पुनरूत्पादन दर	
	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत				बालक	बालिका
15-19	1	0.11	-	-	1	0.07	1	0.04	-	1000	-	-	1000
20-24	77	7.98	65	55.56	52	44.44	117	4.59	800	337.7	-	168.8	168.83
25-29	174	18.03	181	50.70	176	49.30	357	13.91	972	229.9	-	126.44	103.45
30-34	200	20.73	242	48.99	252	51.01	494	19.24	1041	120.00	-	60.00	60.00
35-39	223	23.11	313	49.37	321	50.63	634	24.70	1025	44.84	-	26.91	17.44
40-44	161	16.68	245	47.85	267	52.15	512	19.94	1089	-	-	-	-
45-49	129	13.37	208	46.02	244	53.98	452	17.61	1173	-	-	-	-
ग्रामीण	620	64.25	817	47.83	891	52.17	1708	66.54	1051	121	8.65	1.80	6.85
नगरीय	345	35.75	437	50.87	422	49.13	859	33.46	966	75.36	5.04	2.39	1.64
कुल	965	100	1254	48.85	1313	51.15	2567	100	1047	104.7	8.66	1.91	6.75

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-III, February-2015
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

उपर्युक्त सारणी क्र. 03 से स्पष्ट है कि ग्रामीण नगरीय क्षेत्र में कुल विवाहित महिलाओं में से 64.25 प्रतिशत महिलायें ग्रामीण तथा 25.75 प्रतिशत महिलायें नगरीय है। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं ने 66.54 प्रतिशत शिशुओं को जन्म दिये है, जिसमें 47.83 प्रतिशत शिशु बालक तथा 52.17 प्रतिशत शिशु बालिकायें है तथा लिंगानुपात 1091 है। नगरीय महिलाओं ने कुल 33.46 प्रतिशत शिशुओं को जन्म दिये है, जिसमें 50.87 प्रतिशत शिशु बालक तथा 49.13 प्रतिशत शिशु बालिकायें है तथा लिंगानुपात 966 है। जिले में न्यूनतम प्रजननता 15–19 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाओं में 0.04 प्रति हजार महिला एवं सर्वाधिक प्रजननता 35–39 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाओं में 24.70 प्रति हजार महिला है। इस आयु वर्ग की महिलाओं ने कुल 24.70 प्रतिशत शिशओं को जन्म दिये है, जिसमें 49.37 प्रतिशत बालक, 50.63 प्रतिशत बालिकायें है तथा लिंगानुपात 25–29 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाओं में 972 प्रति हजार महिला है तथा उच्चतम लिंगानुपात 45–49 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाओं का 1112 प्रति हजार महिला है। इस आयु वर्ग की महिलाओं ने कुल 17.6 प्रतिशत शिशुओं को जन्म दिये है, जिसमें 47.34 प्रतिशत बालक तथा 52.66 प्रतिशत बालिकायें है।

शोध के दौरान पाया गया है कि जिले में 15–19 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाओं में सर्वाधिक आयु विशिष्ट प्रजनन दर 1000 है तथा न्यूनतम प्रजनन दर 35–39 वर्ष की आयु वर्ग वाली महिलाओं में 44.84 प्रति हजार है। इस आयु वर्ग की महिलाओं के कुल 24.70 प्रतिशत शिशुओं को जन्म दिये है, जिसमें 49.37 प्रतिशत बालक तथा 50.63 प्रतिशत बालिकायें है। इन शिशुओं का कुल लिंगानुपात 1025 प्रति हजार है। न्यूनतम लिंगानुपात 25–29 वर्ष की आय वर्ग की महिलाओं में जन्में शिशुओं का 972 प्रति हजार महिला तथा उच्चतम लिंगानुपात, 45–49 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाओं से जन्में शिशुओं का 1112 प्रति हजार है। इस आयु वर्ग की महिलाओं ने कुल 17.61 प्रतिशत शिशुओं को जन्म दिये है, जिसमें 47. 34 प्रतिशत बालक तथा 52.66 प्रतिशत बालिकायें है, अर्थात् जिले की महिलाओं का उम्र बढ़ने के साथ–साथ प्रजनन क्षमता कम हो रही है तथा आयु विशिष्ट प्रजनन दर भी घट रही है। इस प्रकार एक विवाहित महिला अपनी प्रजनन आयु पार करते ही अपने स्थान पर 8.66 व्यक्तियों को प्रतिस्थापित ही रहें है। अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न आयु वर्ग की विवाहित महिलाओं का सकल पुनरूत्पादन दर शिशु बालक के आधार पर 1.91 तथा शिशु बालिका के आधार पर 6.75 प्रति हजार है। अतः स्पष्ट है कि भविष्य में जिले की महिलाओं की प्रजनन दर में वृद्धि होने से जनसंख्या में भी वृद्धि होगी।

जिले में प्रजननता का अध्ययन करने के लिये महिलाओं की आयु के साथ–साथ उनकी वैवाहिक संरचना का भी अध्ययन किया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं का कम उम्र में शादी करने से शीघ्र ही वे संतान उत्पन्न करते है और प्रजननता का स्तर ऊंचा होने के साथ–साथ लिंगानुपात भी ऊंचा है। यह महिलायें शिशु बालिकाओं को अधिक जन्म दिये है। इसके विपरीत नगरीय क्षेत्रों में प्रजननता एवं लिंगानुपात दोनों कम है। महिलाओं की वैवाहिक जीवन की अवधि अधिक होने के कारण उच्च प्रजननता तथा लिंगानुपात भी ऊंचा है। विवाह के समय पति–पत्नी की आयु के मध्य अन्तर अधिक होने के कारण प्रजननता तथा लिंगानुपात दोनों उच्च है। जिन दम्पतियों में विवाह के समय अन्तर कम होने से वे शिशु बालकों को अधिक जन्म दिये है। इस स्थिति में प्रजननता, लिंगानुपात दोनों कम है, यह नगरीय क्षेत्रों में पाया गया है।

ग्रामीण क्षेत्रों में विवाह का प्रभावी वर्ष तथा प्रथम गर्भधारण के समय पत्नि की आयु कम होने के कारण प्रजननता तथा लिंगानुपात दोनों ऊंचा है। विवाह के पश्चात अधिक उम्र में गर्भधारण करने वाली महिलाओं में प्रजननता तथा लिंगानुपात कम है यह नगरीय क्षेत्रों के अध्ययन में पाया गया है। विवाह के समय पत्नि की आयु तथा प्रथम गर्भ धारण में कम अंतर होने से शिशु बालिकाओं का जन्म अधिक तथा प्रजननता एवं लिंगानुपात दोनों उच्च है। दो शिशुओं के जन्म के मध्य अन्तराल कम होने से प्रजननता तथा लिंगानुपात दोनों उच्च है। ग्रामीण क्षेत्रों में संयुक्त परिवार की अधिकता तथा जागरूकता की कमी के कारण प्रजननता एवं लिंगानुपात दोनों उच्च है जबकि नगरीय क्षेत्रों में एकल परिवार तथा जागरूकता होने से प्रजननता तथा लिंगानुपात दोनों कम है। अपने वंश को चलाने के लिये पुत्रों की अनिवार्यता तथा पुत्र प्राप्ति की लालसा होने से कई लड़कियां पैदा होने के बाद भी प्रजनन जारी रहता है, जिससे प्रजननता के साथ–साथ लिंगानुपात में भी वृद्धि हो रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में रूढ़ीवादिता, अशिक्षा जागरूकता की कमी एवं परिवार नियोजन की विभिन्न योजनाओं से लाभन्वित नहीं होने के कारण दम्पत्तियों में प्रजननता तथा लिंगानुपात दोनों अधिक है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि जिले की कुल 965 विवाहित महिलाओं को अध्ययन का केन्द्र बिन्दु माना गया है, जिनमें 64.25 प्रतिशत महिलायें ग्रामीण तथा 35.75 प्रशित महिलायें नगरीय है। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं ने कुल 66.54 प्रतिशत शिशुओं को जन्म दिये है, जिनमें 47.83 प्रतिशत बालक तथा 52.17 प्रतिशत बालिकायें है तथा शिशुओं का कुल लिंगानुपात 1091 प्रति हजार है। नगरीय महिलाओं ने कुल 33.46 प्रतिशत शिशुओं को जन्म दिये है, जिसमें 50.87 प्रतिशत शिशु बालक तथा 49.13 प्रतिशत बालिकायें है। शिशुओं का कुल लिंगानुपात 966 प्रति हजार है। ग्रामीण क्षेत्रों का कुल आयु विशिष्ट प्रजनन दर 120.97 प्रति हजार तथा कुल प्रजनन दर 8.65 प्रति हजार हैं सकल पुनरूत्पादन दर शिशु बालक के आधार पर 1.80 प्रति हजार तथा बालिका के आधार पर 6.85 प्रति हजार है। इस क्षेत्र में शिशु बालिका की अधिकता के कारण भविष्य में प्रजननता तथा जनसंख्या में वृद्धि होगी। नगरीय क्षेत्र में कुल आयु विशिष्ट प्रजनन दर 75.36 प्रति हजार, कुल प्रजनन दर 5.

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-III, February-2015
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

035 प्रति हजार तथा सकल पुनरूत्पादक प्रजनन दर शिशु बालक के आधार पर 2.39 प्रति हजार तथा शिशु बालिका की कमी के कारण भविष्य में प्रजननता में कमी होने से जनसंख्या में कमी आयेगी।

ग्रामीण–नगरीय क्षेत्रों का संयुक्त अध्ययन करने से ज्ञात हआ है कि न्यूनतम प्रजननता 15–19 वर्ष की आयु वर्ग वाली महिला में 0.04 प्रतिशत है। इन महिलाओं ने शत प्रतिशत शिशु बालिकाओं को जन्म दिये है। उच्चतम प्रजननता 35–39 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाओं का 24.70 प्रतिशत हैं जिसमें 49.37 प्रतिशत शिशु बालक तथा 50.63 प्रतिशत शिशु बालिकायें है। जिले की महिलाओं का कुल आयु विशिष्ट प्रजनन दर 104.66 प्रति हजार है। यह दर 15–19 वर्ष की आयु वर्ग वाली महिलाओं में सर्वाधिक तथा 35–39 वर्ष की आयु वर्ग वाली महिलाओं में न्यून है। जिले की कुल प्रजनन दर 8. 66 प्रति हजार है तथा सकल पुनरूत्पादन दर शिशु बालक के आधार पर 1.91 प्रति हजार एवं शिशु बालिका के आधार पर 6.75 प्रति हजार है। अतः स्पष्ट है कि जिले में बालिकाओं की संख्या अधिक होने के कारण भविष्य में प्रजननता में वृद्धि होने से जनसंख्या में भी वृद्धि होगी। जनसंख्या में वृद्धि से आवास समस्या, खाद्यान्न की कमी, बेरोजगारी में वृद्धि, गंदगी, भूखमरी, अशांति एवं पर्यावरण प्रदूषण जैसी अनगिनत समस्यायें पैदा हो जायेगी। समस्याओं के विकराल रूप से जिले की अर्थव्यवस्था, अव्यवस्थित होकर विकास के मार्ग में बाधा उत्पन्न करेगी। इन समस्याओं के समाधान के लिये साक्षरता दर को ऊंचा उठाया जाय ताकि जन जागरूकता में वृद्धि होने से परिवार नियोजन की विभिन्न योजनाओं से लाभन्वित होकर, प्रजननता दर में गिरावट आये। जनसंख्या वृद्धि के अभिशाप से मुक्त होकर यह जिला प्रदेश के विकसित जिलों में सम्मिलित हो तथा प्रत्यक मानव को विकास के पथ पर आगे बढ़ सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पण्डा, बी.पी. (1991) जनसंख्या भूगोल, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
2. पंत, जे.सी. (1990) जनांकिकी, गोयल पब्लिसिंग हाऊस, सुभाष बाजार, मेरठ
3. बघेल, डी.एस. एवं जनांकिकी, विवेक प्रकाशन जवाहर नगर, दिल्ली बघेल किरण (2012)
4. चांदना, आर.सी. (1987) जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिसर्स लुधियाना
5. मौर्य, एस.डी. (2015) जनसंख्या भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
6. ओझा, रघुनाथ (1968) जनसंख्या भूगोल, म.प्र.हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
7. सिन्हा, वी.सी. सिन्हा, पुष्पा (2006) एवं जनांकिकी के सिद्धांत, मयूर पेपर बैंक्स, नोएडा (उ.प्र.)
8. यादव, हीरालाल (2012) जनसंख्या भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर (उ.प्र.)
9. Bogue, D. (1969) Principals of Degography, New york
10. Bose, Ashish (1994) Demographic zones in India, Publishing Corporation Delhi
11. Barmaiya, J.L. (2000) A Georaphical Study of Gender Imbalances in Maikal Plateau, Unpublished thesis, Dr. Hari Singh Gaur Vishvidyalaya Sagar (MP)